Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-3, Issue-10, Continuous Issue-26, July - August 2024

"वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वसुद्यैव कुटुम्बकम् की भावना"

- Dr. Priyanka Chauhan

 प्रस्तावना :-

साहित्यिक रुप से संस्कृत एक समृद्ध भाषा है । इसी भाषा से एक महान विचार की उत्पत्ति हुई है । 'वसुद्यैव कुटुम्बकम्' वसुधा का अर्थ है - पृथ्वी और कुटुम्ब का अर्थ हैं परिवार । इस दुनिया में रहने वाला हर एक व्यक्ति मानवता का एक हिस्सा होता है । जिसमें वसुद्यैव कुटुम्बकम् के माध्यम से हम यह देख सकते है की, यह दुनिया एक परिवार है, जहाँ हर एक व्यक्ति एक दूसरे के साथ मानवता के माध्यम से इस दुनिया से एक परिवार के हिस्से के रुप में जुड़ जाता है । इस तरह वसुधैव कुटुम्बकम् के माध्यम से हम मानवता को देख सकते है ।

वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म का मूल संस्कार तथा विचारधारा है । जो महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिपिबद्ध है । इसका अर्थ है । धरती ही परिवार है । यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है ।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् /

उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् //

(महोपनिषद्, अध्याय ६, मंत्र-७१)

वसुधैव कुटुम्बकम् एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ होता है कि 'विश्व एक परिवार है ।' यह एक दार्शनिक अवधारणा है । जो सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों को परस्पर संबंध के विचार का प्रतीक है । वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश यह है कि प्रत्येक व्यक्ति वैश्विक समुदाय का सदस्य है और सभी को एक-दूसरे के साथ सम्मान और करुणा का व्यवहार करना चाहिए । तेजी से बढ़ रही आज की दुनिया में वसुधैव कुटुंम्बकम् और मानवता के मूल्य को समझना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है ।

 वसुधैव कुटुम्बकम् की महत्त्वपूर्णता :-

भाग-दौड़ से भरे और इस विकासशील विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की महत्वपूर्णता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है । वसुधैव कुटुम्बकम् सन्देश को आज विश्व स्तर पर माना जा रहा है । हम जिस समाज में रहते हैं वहाँ बहुत ही तेजी से राष्ट्र, जात-पात, संस्कृति की बाधाएँ खत्म होती नजर आ

रही है । आज हमारा समाज वसुधैव कुटुम्बकम् सन्देश का पालन करके एक ऐसी दुनिया का निर्माण करने को तैयार है जहाँ सभी के साथे समान रुप से और गरिमापूर्ण व्यवहार किया जाता हो ।

वसुधैव कुटुम्बकम् के प्रभाव से एक बेहतर भविष्य का निर्माण हो सकता है । भाई चारा, एकता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान को बढ़ावा देकर हम असमानताओं को कम कर सकते हैं तथा मानवता के मूल्य को समझ सकते हैं तथा मानवता के मूल्य को समझ सकते हैं । विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना शांतिपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण औऱ समावेशी से भरे विश्व का निर्माण करेगी । वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव हमे बेहतर विश्व के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका को याद दिलाता है ।

वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं की समृद्धि को बढ़ावा देता है । यह विविधता और समावेशिता के महत्त्व को पहचानता है और लोगो को एक-दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता हैं । यह रुढ़ियो को तोड़ने औऱ सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है ।

वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन व्यक्ति औऱ समुदायो को रचनात्मक रुप से सोचने औऱ चुनौतियों का नवीन समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है । यह मानता है कि विविधता और समावेशिता रचनात्मकता के महत्त्वपूर्ण स्त्रोत हैं और विविध दृष्टिकोण सफलताओं और नवाचारों को जन्म दे सकते हैं ।

द हिंदू की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने जी-२० के लोगो में संस्कृत श्लोक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के इस्तेमाल का बचाव करते हुए कहा है कि वह इस श्लोक के सिर्फ अंग्रेजी अनुवाद - "एक दुनिया, एक परिवार, एक भविष्य" का इस्तेमाल ही दस्तावेज़ो और बयानों में कर रहा है ।

अरिंदम बागची ने कहा, "इंग्लिश में भारत की अध्यक्षता में हो रहे जी-२० की थीम है । वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर । यह वसुधैव कुटुम्बकम् के हमारे सभ्यतागत लोकाचार पर आधारित है और इसे व्यापक समर्थन मिला है । यह उन कई पहलों में शामिल है जिन्हें भारत ने जी-२० एजेंडे में शामिल किया है ।" उन्होने ये भी कहा कि भारत की अध्यक्षता में जी-२० के लेटरहेड पर ये श्लोक देवनागरी और अंग्रेजी लिपि में अंकित है । मीडिया रिपोर्टो में कहा गया था कि चीन अकेला देश है जिसे इस श्लोक के इस्तेमाल पर विरोध है । रुस ने भी इस मुद्दे पर चीन का समर्थन नहीं किया है । हालांकि रुस जी-२० के दस्तावेजों में युक्रेन को लेकर इस्तेमाल की जा रही भाषा का विरोध करता रहा है ।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा आयोजित विश्व संस्कृति महोत्सव में एक भाषण में इस वाक्यांश का इस्तेमाल किया, उन्होंने कहा कि "भारतीय संस्कृति बहुत समृद्ध है

और इसने हममें से प्रत्येक में महान मूल्यो को शामिल किया है हम वे लोग है जो यहाँ से आए हैं।" अहं ब्रह्मास्मि से वसुधैव कुटुम्बकम् हम उपनिषद से उपग्रह तक आए लोग हैं । इसका उपयोग ७ वें आंतरराष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान ओलंपियाड के लोगो में किया गया था, जो २०१३ में मैसूर, भारत में आयोजित किया गया था । इसे स्कूली पाठ्यक्रम में पृथ्वी की उप-प्रणालियों के एकीकरण पर जोर देने के लिए डिजाइन किया गया था । इसे मैंग्लोर यूनिवर्सिटी के आर. शंकर और श्वेता बी. शेट्टी ने डिजाइन किया था ।

१ दिसंबर २०२२ से ३० नवंबर २०२३ तक भारत की G-20 प्रेसीडेंसी की थीम और लोगो में "वसुधैव कुटुम्बकम्" या "एक पृथ्वी - एक परिवार - एक भविष्य का उल्लेख हैं ।" लोगो डिज़ाइन प्रतियोगिता के माध्यम से आमंत्रित २४०० अखिल भारतीय प्रस्तुतियों की जांच के बाद लोको का चयन किया गया था । हालाँकि चीन के विरोध के कारण, जिसने दावा किया कि संस्कृत राष्ट्र की छह आधिकारक भाषाओं में से एक नहीं है । यह वाक्यांश अधिकांश आधिकारिक जी-२० दस्तावेजों में प्रदर्शित होने में विफल रहा ।

वसुधैव का प्राचीन विचार आज भी प्रासंगिक माना जाता है । यह वैश्विक परिप्रेक्ष्य को बढ़ावा देता है और व्यक्तिगत या पारिवारिक हितों से अधिक बेहतरी को प्राथमिकता देता है । यह दूसरों के कल्याण पर विचार करने, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, शांति और मतभेदों के प्रति सहिष्णुता सहित विभिन्न मुद्दों पर वैश्विक एकजुटता और जिम्मेदारी को बढ़ावा देने को प्रोत्साहित करता है ।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति के पूर्व निदेशक डॉ. एन. राधाकृष्णन का मानना है कि समग्र विकास और जीवन के सभी रुपों के लिए सम्मान की गांधीवादी दृष्टि; अहिंसा को एक सिद्धांत और रणनीति दोनों के रूप में स्वीकार करने में अंतर्निहित अहिंसक संघर्ष समाधान: वसुधैव कुटुंम्बकम् की प्राचीन भारतीय अवधारणा का विस्तार थे ।

- उपसंहार :-

वसुधैव कुटुंम्बकम् एकता और परस्पर जुड़ाव का एक शक्तिशाली संदेश है जो दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखता है । यह मानता है कि हम सभी एक वैश्विक परिवार का हिस्सा हैं और हमें एक-दूसरे के साथ सम्मान, करुणा और दया का व्यवहार करना चाहिए । इस अवधारणा को अपनाकर हम अपने लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अधिक सामंजस्यपूर्ण और बेहतर दुनिया बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं ।

- ग्रंन्थसूची :-

१) महोपनिषत् ।

२) एस. शाह और वी. राममूर्ति (२०१४), सोलफुल कॉर्पोरेशन.

३) "अहिंसा का डीएनए हमारे समाज में बसा हुआ है - पीएम" टाइम्स नाउ ।

४) "यूट्यूब"

Dr. Priyanka Chauhan

Nalini - Arvind and T. V. Patel Arts College, Vallabh Vidyanagar - anand

Mo : 8238003599, Email : pvc26491@gmail.com